भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में हिंदी-अध्ययन सप्ताह

हिंदी-क्षेत्र : संदर्भ आधुनिकता

हिंदी और भारतीय आधुनिकता के बीच गर्भनाल का संबंध ही नहीं है, बल्कि हिंदी की एक अपनी विशिष्ट आधुनिकता भी है। पिछले पचास-साठ साल में हिंदी-माध्यम की विद्यालयीय शिक्षा, समाचार माध्यमों, हिंदी फिल्मों और टीवी के प्रसार ने विभिन्न सांस्कृतिक-भाषाई जनपदों को एक भाषाई सूत्र में पिरो कर एक विशाल क्षेत्र बनाया है जिसके कारण आज हम हिंदी की आधुनिकता जैसी विराट अवधारणा की शक्ल-सूरत पर गौर कर पा रहे हैं। हिंदी की यह आधुनिकता मनोरंजन, सूचना-संचार क्रांति और राजनीति के जरिए विंध्याचल के पार तक जाती है, और वहाँ से लौटते हुए अधिक सार्वदेशिक हो कर स्वयं को समृद्ध करती है। इस क्षेत्र के चालीस करोड़ लोग अपने नवोदित मध्यवर्ग, अपने दलित और पिछड़े समुदायों, अपने अल्पसंख्यकों और मुक्ति-परियोजना में व्यस्त आधी दुनिया हमारी आधुनिकता के इस अनूठे और कारगर रूप के जरिए इक्कीसवीं सदी का सफर तय करने वाले हैं।

आधुनिकता के गर्भ से जन्म लेने के कारण हिंदी को उन भाषाओं के मुकाबले कुछ विशेष सुविधा है जिनके कंधों पर आधुनिकता से पहले वाले वक्तों का बोझ भी है। इसीलिए हिंदी आधुनिक विचारों के साथ अलग तरह का सुलूक करते हुए दिखती है। उसकी दुनिया में जब आधुनिक विचार आते हैं तो उनका नाम और विरासत वही रहती है, पर उनके भीतर नए तरह की पेचीदगियाँ पैदा हो जाती हैं। जिसे हम यूटेशन (उत्क्रमण) कहते हैं, वैसा कुछ हो जाता है। हिंदी की दुनिया में सभी तरह के आधुनिक विचारों के साथ ऐसा ही हुआ है। चाहे राष्ट्रवाद हो, सेकुलरवाद हो, सा प्रदायिकता हो, मार्क्सवाद हो, नारीवाद हो, लोकतंत्र का विचार हो, या अम्बेडकरवाद का विचार हो। आधुनिकता के एजेंट के रूप में हिंदी के औजारों से परंपरा का पुन: संस्कार भी हुआ है। जो विचार हमने बुनियादी तौर पर पश्चिम से लिए हैं, वे तो हिंदी की दुनिया में आकर बदलते दिखते ही हैं, लेकिन जो भारत में ही पनपे हैं, जैसे अम्बेडकरवाद, उनके साथ भी हिंदी का सुलूक वही है जो नई-नई खोजें करने वाले किसी इंजीनियर का होता है। अम्बेडकरवाद महाराष्ट्र से उत्तर भारत के सफर पर ब्राह्मणवाद विरोध के घोड़े पर सवार हो कर चला था। आज यहाँ आ कर आज पूरी तरह से बदल चुका है। हिंदी का राष्ट्रवाद कैसा है, इस पर विवाद हो सकता है। पर, वह भारतीय राष्ट्रवाद की अन्य किस्मों से भिन्न है, इस पर शायद ही कोई विवाद हो। हिंदी में एक खास तरह का नारीवाद पिछले बीस-पच्चीस सालों से पनप रहा है जिसे लेकर इस भाषा के भीतरी हल्कों में बड़ा विवाद है। हिंदी की दुनिया में पिछले दिनों स्त्री लेखन, दलित लेखन, मुसलमान लेखन अन्य तमाम तरह के लेखनों का जो दिलचस्प लोकतंत्र बना है, उसके भीतर ढेर सारी वैचारिक इंजीनियरिंग घटित हो रही है।

आधुनिक विचारों के आईने में हिंदी की दुनिया का जायजा लेने से एक पंथ-दो काज हो सकते हैं। हिंदी की स्वातंत्र्योत्तर दुनिया तो नए सिरे से हमारी समझ में आएगी ही, हिंदी संबंधी अध्ययनों का उपयोग करके भारतीय आधुनिकता की विशेषताओं, दुविधाओं, अंतर्विरोधों, विरोधाभासों और अंतर्बाधाओं पर भी रोशनी पड़ सकेगी। हिंदी की आधुनिकता के जरिए भारतीय आधुनिकता का यह संधान किताबी किस्म का नहीं होगा। पश्चिम द्वारा थमाए आधुनिकता के सिद्धांतों के मुकाबले यह व्यावहारिक आधुनिकता होगी जिसका बरताव हिंदीभाषी संसार अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में करता है। चूँकि यह रोज़ाना की आधुनिकता दुनिया भर में आधुनिकता की विभिन्न निष्पत्तियों के साथ अपने रिश्तों के सैद्धांतीकरण की प्रतीक्षा भी कर रही है, इसलिए भी यह विस्तृत जाँच-पड़ताल की माँग करती है। वस्तुत: हिंदी पर आलोचनात्मक निगाह डालना उस भारतीय आधुनिकता पर आलोचनात्मक निगाह डालना है जिसके अंग हम सब हैं। हिंदी की आलोचना जब हम करते हैं तो दरअसल हम अपनी आलोचना कर रहे होते हैं। आधुनिक विचारों को हमने किस तरह ग्रहण किया है, उसकी आलोचना कर रहे होते हैं।

हिंदी के भीतर आधुनिकता समीक्षा की समृद्ध परंपरा है। पचास के दशक से ही बहस हो रही है कि भारतीय समाज की परंपरागत संरचनाओं के प्रति उसका क्या रवैया रहा है और क्या होना चाहिए। इस बहस में खुद को मार्क्सवादी

या उदारतावादी कहने वाले लेखक, बुद्धिजीवी, रचनाकार, सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ गहराई से उलझे रहे हैं। हिंदी के बाहर भी यह समीक्षा खूब हुई है। अंग्रेजी के विद्वानों ने राष्ट्रवाद, सेकुलरवाद और लोकतंत्र संबंधी मानकों के आधार पर हिंदी पर अपने तफ़सिरे लिखे हैं। इस समीक्षा को एक नए आयाम में ले जाने के लिए ही यह अध्ययन सप्ताह आयोजित किया जा रहा है। हमारा मुख्य लक्ष्य हिंदी-क्षेत्र की कुछ स्थापित संकीर्णताओं से बचते हुए आधुनिकता पर बातचीत करना है जिसके लिए हिंदी का साहित्यिक, पत्रकारीय और विमर्शी लेखन अपरिमित संदर्भ और सामग्री प्रस्तुत करता है। लेकिन, यह स्पष्ट करना भी जरूरी है कि आधुनिकता और हिंदी के संबंध किसी शून्य में नहीं खड़े हैं। उन्हें अन्य भाषाओं और ज्ञान के अन्य क्षेत्रों, विशेषकर समाज विज्ञान के क्षेत्र में हुए चिंतन-मनन की समृद्ध परंपराओं से अलग करके नहीं समझा जा सकता। जब तक ऐसा नहीं होगा, भाषा को संस्कृति के व्यापक दायरों तक नहीं ले जाया जा सकता।

इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अध्ययन सप्ताह की रूपरेखा कुछ संभावित विषयवस्तुओं के इर्द-गिर्द की गई है। ये विषयवस्तुएँ हैं : हिंदी में आधुनिकता समीक्षा की परंपरा, हिंदी-माध्यम और आधुनिकता की रचना, हिंदी की स्वातंत्र्योत्तर राजनीति में वैचारिक परिवर्तन, हिंदी और जनपदीय भाषाओं के अंतर्संबंध, अंग्रेजी के साथ जद्दोजहद और समाचार-माध्यमों में हिंदी-विस्फोट, नारीवाद की विशिष्ट संरचनाएँ, दलित लेखन की सांस्कृतिक राजनीति, मुसलमान लेखन की आवाज, आदि। प्रत्येक दिन एक विषयवस्तु पर केंद्रित होगा और वह तीन हिस्सों में बँटा होगा। पहला हिस्सा दो पर्चों / प्रस्तुतीकरणों का होगा, दूसरा हिस्सा रचना पाठ पर केंद्रित रहेगा, और तीसरे हिस्से में वैचारिक लेखन के अंशों का पाठ होगा। हर प्रस्तुतीकरण को आधे घंटे का समय दिया जाए, दस मिनट तक उसके ऊपर एक टिप्पणीकार बोले और उसके बाद बाकी चालीस मिनट तक हम उस पर सघन चर्चा करें। बाकी आधे दिन में पहले उसी विषयवस्तु से जुड़ा रचना पाठ हो, उस पर दस मिनट की टिप्पणी के बाद तीस मिनट तक चर्चा हो। इसके बाद उसी विषयवस्तु से संबंधित वैचारिक लेखन के अंश का पाठ किया जाए, फिर उस पर दस मिनट की टिप्पणी के बाद चर्चा हो। इस तरह इस स्टडी-वीक में कम से कम छः या सात विषयवस्तुओं पर दस-बारह मौलिक प्रस्तुतियाँ की जा सकेंगी, कम से कम पाँच-छः रचनाओं और वैचारिक लेखन के पाँच-छः अंशों के इर्द-गिर्द विमर्श किया जा सकेगा।